**For**

**Promotion**

**Under**

**Car...**

An International Registered Peer Reviewed Bilingual Research Journal

SATRACHEE

UGC Care Listed Journal

ISSN 2348-8425

# सत्राची

वर्ष 10, अंक 34 एवं 35,
जनवरी-जून, 2022

संपादक
आनन्द बिहारी

प्रधान संपादक
कमलेश वर्मा

आलेख

# प्रवासी भारतीय स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

○ संगीता मौर्य

कोरोना काल की उस भयावह स्थिति से कौन रूबरू नहीं होगा ! जब अपने ही देश के मजदूर पलायित हो रहे थे। उस समय शासन तंत्र से लेकर तमाम ऐसे लोग देखे गये जो उन लोगों की दिल खोलकर मदद कर रहे थे। कुछ ऐसे लोग भी थे जो इन दुखियारों पर और जुल्म ढा रहे थे। लोग मीलों पैदल चलकर अपने गाँव-घर पहुँचना चाहते थे। उनमें से कितने रेल की पटरियों के नीचे आ गये और कितने उन पटरियों पर पड़ी रोटियां खाने को विवश हुए। इतना ही नहीं इन पटरियों और सड़कों पर चलने की कीमत उन लोगों ने ही सबसे ज्यादा चुकाई है जिन्होंने अपने खून और पसीने से इसका निर्माण किया था। पलायन कर रहे इन मजदूरों में स्त्रियों की स्थिति तो और भी संघर्षमय और यातनापूर्ण थी। ये कामगार स्त्रियाँ जब अपने घरों के लिए खदेड़ी जा रही थीं उस समय कितनी अपने दूधमुँहे बच्चे को गोद में लिए भूख से बिल-बिलाते हुए बच्चे को पानी पिलाकर ही आगे बढीं। ऐसे में न जाने कितनी तो रास्ते में ही बच्चा जनने को मजबूर थीं। बच्चा जनने के कष्ट का अनुमान इस शासन और सत्ता के रखवालों को कहाँ पता होगा! अपने ही देश में इस भयानक स्थिति से गुजर रहे इन कामगारों को देखने पर सहसा ही उन गिरमिटिया की ओर ध्यान जाता है जो आरकटियों का शिकार बनकर दूसरे देशों में जाने को मजबूर हो गए। कुछ इसी तरह का उदाहरण इन गिरमिटिया स्त्रियों का भी है कि "*नुसवुसाउ बागान में एक महिला नारायणी ने 16 अगस्त, 1910 ई. को एक बच्चे को जन्म दिया जो 4 दिन में मर गया। महिला का काफी खून रिस रहा था, पर उसे पत्थर तोड़ने का काम दे दिया गया था। वो यह काम कर नहीं पा रही थी, तो सरदार मुनीराम ने कुलाम्बर ब्लामफिल्ड से विनती की कि उसे कुछ और काम दे दें। ब्लामफील्ड ने नारायणी के बाल खींचे और कई दफे पत्थरों पर दे मारा। फिर बेंत से बहुत मारा। वो खून से लथपथ नागागा अस्पताल ले जायी गयी। अस्पताल पांच मिल दूर था और उसे गिरमिटिया कालीराम पैदल ले जा रहे थे वो बेहोश होकर गिर गई तो कालीराम उसे कंधे पर ढोकर ले गये।*"[1]

इस तरह के तमाम कष्टों का सामना इन गिरमिटिया स्त्रियों को करना पड़ता था। जब वे आरकटियों के जाल में फँस जातीं तब भी उनको पता नहीं चल पाता कि उनके साथ कौन सी साजिश की गयी है। उनको तो पता तब चलता था जब वे विदेशी धरती पर पहुँच जातीं और अपने को दूसरों के अधीन पातीं। वहाँ पहुँचने के बाद ये बेबस और बेसहारे मजदूर श्रम, शक्ति और हिंसा के कारण वहीं अपने प्राणों को त्याग देते। सत्येंद्र कुमार तनेजा ने सत्ता और साम्राज्यवादी चेहरे को बेनकाब करते हुए लिखा है कि "अवसर मिले तो साम्राज्यवाद का चेहरा किस कदर खौफनाक हो सकता है, इस असलियत का एहसास 'कुली-प्रथा'

एक परंपरा की तरह जिया है। लेकिन साथ ही स्त्रियों ने वे तमाम अपमान और दयनीय यातनाओं को भी झेला है जो 'एक गरिमा और सम्मान के साथ जीने के अवसर से वंचित करती है। यह कहना कि मजदूरों और स्त्रियों का कोई देश नहीं होता यह सर्वथा सत्य प्रतीत होता है। अगर ऐसा न होता हो तो जिस मेहनत और लगन से वे अपने कार्य को अंजाम देते हैं, चाहे वे जिस भी स्थान पर रहें, उन्हें एक सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार जरूर मिला होता। पर ऐसा नहीं हो सका, वही स्थिति भारतीय समाज में कमोवेश आज भी व्याप्त है। आज भी 'गटर की सफाई करते मजदूर के मौत' की खबरें अखबार का हिस्सा नहीं बनती। जबकि प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री आदि ऐसे शासनतंत्र के लोग क्या खाए! क्या पहने! बंदर कैसे पानी पीता है कौवा कैसे प्यास बुझा रहा है जैसी उलूल-जुलूल खबरें अखबार में खूब जगह घेरती हैं। भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था इस कदर असमानता की जड़ता से जकड़ी हुई है कि प्रत्येक व्यक्ति न चाहते हुए भी इसकी गिरफ्त में आ ही जाता है। फिर, हम इस समस्या से विमुख हो जाते हैं, या फिर इसे समस्या ही नहीं मानते। गिरमिटिया मजदूरों के शोषण और संघर्ष को इन विषमताओं के माध्यम से समझा जा सकता है। जिसके माध्यम से मजदूरों और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का सहज ही आकलन किया जा सकता है।

संदर्भ :


1. राजेंद्र प्रसाद, टियर्स इन पैराडाईज : सफरिंग एण्ड स्ट्रगल्स ऑफ इंडियंस इन फिजी 1879-2004, ग्लोड पब्लिशर्स 2004 (सं.1.द्वितीयक स्रोत)
2. सत्येंद्र कुमार तनेजा : सितम की इंतिहा क्या है? राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बहावलपुर हॉउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010 : 158
3. कुली लाइन्स, प्रवीण कुमार झा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : 56
4. राजेंद्र प्रसाद (सं.1. द्वितीयक स्रोत)
5. राजेंद्र प्रसाद (सं.1. द्वितीयक स्रोत)
6. वही (संदर्भ-28)
7. गयुत्रा बहादुर, कुली वीमेंस : डी ओडिसी ऑफ इंडेचर, हर्स्ट कंपनी 2013 (द्वितीयक सोर्स)
8. वही : 43
9. Burton J.W. The Fiji of to-day. 1910.
10. प्रसार भारती केन्द्रीय अभिलेखागार की विशेष प्रस्तुति- भोजपुरी लोकगीत
11. Burton J.W. The Fiji of to-day. 1910.


❑❑